आलू

आलू की फ़सल में विविध पोषक तत्वों की कमी से होनेवाले परिणाम

मुख्य पोषक तत्व

नायट्रोजन

पुराने पत्ते हल्के पीले रंग के होना। तना कमजोर और पीला पडना। पौधे के वृद्धी में कमी आना। कल्ले कम बनना, फूलों का कम आना, अंत में पत्ते सूखकर गिर जाना।

फॉस्फरस

पौधे का विकास रुकना, पुराने पत्तों का रंग हल्का बैंगनी या भूरा हो जाना। जड़ों का विकास रुकना, फूल और फल कम लगना, पत्तों का आकार छोटा रह जाना, पत्ते काले हो जाना।

पोटाशियम

पुराने पत्तों के किनारे और सिरे पीले होकर झुलस जाते है। पत्ते सिरे से सिलवटते है। फलों का आकार और विकास ना होना।

दुय्यम एवं सूक्ष्म पोषक तत्व

सल्फर (गंधक)

उपरी पत्ते सुनहरी पीले और नसें हल्की हरी होना, पत्तों का आकार छोटा रहना। जड़ों का विकास रुकना।

कॅल्शियम

नये पत्ते सिरे से सूखना, नई पत्तियों के किनारे का मुड और सिकुड़ जाना। अग्रिम कली का सूख जाना, जड़ों का विकास रुकना।

मॅग्नेशियम

निचले पत्तों में मुख्य नसें हरी रहकर बीच की जगह पीला पड़ना, तीव्र कमी में बीच का हिस्सा लाल या जामुनी होना। अंत में पत्तों का झड़ना।

जस्ता (झिंक)

पत्तियों का आकार छोटा, मुडी हुई, नसों के निक्रोसिस और नसों के बीच पीली धारियों का दिखाई पड़ना। पौधे का अवरुद्ध विकास।

फेरस (लोह)

उपरी पत्तों में नसे हरी रहकर पत्ता पीला पड़ना। तीव्र कमी में उपरी पत्ते सफेद (हरितद्रव्य रहित) हो जाते है। अवरुद्ध विकास।

कॉपर (तांबा)

पौधों का विकास कम होता है। पत्ते गहरे पीले रंग के होकर कमजोर होकर गिरने लगते है।

मँगनीज

नये पत्तों में सारी नसें हरी रहकर बीच का हिस्सा पीला दिखाई देता है। पत्ता जालीदार हो जाता है।

बोरॉन

तना और जड़ों का विकास कम होता है, शिखर (टर्मिनल) कली का विकास कम होकर सूखकर गिर जाती है। आलू के आकार में विकृती आती है।

Manshya®

मनश्या मार्केटिंग प्रा. लि.

सर्वे नं. 49 (पार्ट), राजकुमार लोढा इंडस्ट्रीयल इस्टेट, कात्रज - कोंढवा रोड, कात्रज, पुणे- 411046.

Mob : 9011001895 | 9175161896 E-mail : manshya@gmail.com

www.manshyagroup.com

स्थानीय विक्रेता / प्रतिनिधी

आलू की फ़सल का संतुलित पोषण और भरपूर पैदावार के लिये खाद की मार्गदर्शक मात्राएँ

जमीन से दी जानेवाली मात्राएँ एवं समय (प्रमाण प्रति एकड़)

जमीन तैयार करते समय (प्राथमिक मात्रा)	सिंगल सुपर फॉस्फेट	200 किलो
	कॅल्फर-एस	25 किलो
	फॉस्फोक्लिक	4 किलो
बुवाई के समय	डी.ए.पी. अथवा 12:32:16	100 किलो
	म्युरेट ऑफ पोटॅश (एम.ओ.पी.)	50 किलो
	फर्टिकिट (सूक्ष्म पोषक तत्व खाद का संयुक्त पैक)	1 किट
बुवाई के बाद 20 से 25 दिनों से	युरिया	50 किलो
	ह्युमिगार्ड	5 किलो
बुवाई के बाद 30 से 35 दिनों से	फर्टोजन अमोनियम सल्फेट	25 किलो
	मॅग्नाफर	10 किलो
	लॉबस्टर + +	500 ग्राम
बुवाई के बाद 45 से 50 दिनों से	युरिया	25 किलो
	नायट्रोकॅल	25 किलो
	सेलबोर	250 ग्राम
बुवाई के बाद 55 से 60 दिनों से	म्युरेट ऑफ पोटॅश (एम.ओ.पी.)	50 किलो
	केमॅग	10 किलो

छिडकाँवद्वारा दी जानेवाली मात्राएँ एवं समय

अ.क्र.	छिडकाँव का समय	उत्पाद	प्रमाण 100 लीटर पानी में
1	बुवाई के बाद 25 से 30 दिनों से	फर्टोजन 12:61:00 + सिक्वेस्ट कॉम्बी	500 ग्राम 100 ग्राम
2	बुवाई के बाद 40 से 45 दिनों से	फर्टोजन 00:52:34 + झिनस्टार- 70	500 ग्राम 100 मिली
3	बुवाई के बाद 55 से 60 दिनों से	मेपासोल + सिक्वेस्ट कॉम्बी	500 ग्राम 100 ग्राम
4	बुवाई के बाद 75 से 80 दिनों से	मेपासोल + ब्रिक्समोर प्लस	500 ग्राम 200 मिली
5	बुवाई के बाद 90 दिनों से	फर्टोजन 00:00:50	2 किलो

जैविक खाद मात्रायें प्रति एकड़ (200 लीटर पानी में मिलाकर जमीन पर छिडकाँव करें)

- सूत्रकृमि (नेमॅटोड्स) का नियंत्रण करने के लिये : अंकुरण के बाद तुरंत निमारेस्ट 1 लीटर आवश्यकता हो तो 1 महिने के अंतराल से मात्रा दोहराये।
- फफूँदी और बॅक्टिरियल रोगों का नियंत्रण करने के लिये : अंकुरण के बाद 15 से 20 दिनों से ट्रायविल्ट 1 लीटर + पॉसिडॉन 1 लीटर। (जरुरत के अनुसार मात्रा दोहराये)
- फ़सल के परिपूर्ण विकास के लिये : अंकुरण के बाद 4 से 5 दिनों बाद नायट्रोक्लिक 1 लीटर + मायकोफॉस 100 ग्राम + पॉट्सक्लिक 1 लीटर + ह्युमिकॉट एफ.जी. 500 ग्राम मिलाकर दे। यह मात्रा हर 30 से 40 दिनों के अंतराल से फ़सल पकने तक देते रहिये।

30 से 40 दिन के बाद मिक्सोजन 1 लीटर + झिंको झेड बी 1 लीटर

सूचना - जैविक मात्रा देने के बाद दो हफ्तों तक जमीन में नमी बनाये रखे।

सूचना : उपरोक्त मात्राएँ सर्वसाधारण है। फ़सल की अवस्था तथा अन्य घटकों का असर देखकर, विशेषज्ञ की सलाह लेकर मात्रा में आवश्यक बदलाव करें।

वॉरंटी : हमारे उत्पादों की गुणवत्ता हमेशा एकसमान रखने के अलावा हम अन्य किसी भी प्रकार की जिम्मेदारी का स्वीकार नहीं करते, क्योंकी इन उत्पादों का इस्तेमाल और रखाव हमारे नियंत्रण के बाहर है।